भारतीय अर्थव्यवस्था 1950-1990

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» आर्थिक प्रणालियों के प्रकार और भारत का मॉडल

प्रश्न 1 (आसान). किस आर्थिक प्रणाली में सभी उत्पादन के साधनों पर सरकार का पूर्ण नियंत्रण होता है?
उत्तर – समाजवादी अर्थव्यवस्था

प्रश्न 2 (आसान). पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन मुख्यतः किसके लिए होता है?
उत्तर – बाजार की माँग और लाभ के लिए

प्रश्न 3 (मध्यम). भारत ने आजादी के बाद मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल क्यों अपनाया? दो मुख्य कारण बताइए।
उत्तर – भारत ने पूँजीवाद की कमियों (जैसे गरीबों का ध्यान न रखना) और समाजवाद की अतिवाद (जैसे निजी संपत्ति का अभाव) दोनों से बचना चाहा। उसे लगा कि मिश्रित मॉडल में सार्वजनिक कल्याण भी होगा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता भी बनी रहेगी।

» पंचवर्षीय योजनाएँ और उनके लक्ष्य

प्रश्न 4 (आसान). भारत में योजनाएँ कितने वर्ष की अवधि की होती थीं?
उत्तर – पाँच वर्ष की।

प्रश्न 5 (आसान). संवृद्धि का क्या अर्थ है?
उत्तर – देश में वस्तुओं और सेवाओं की उत्पादन क्षमता में वृद्धि।

प्रश्न 6 (मध्यम). आधुनिकीकरण सिर्फ नई तकनीक अपनाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका एक और महत्वपूर्ण पहलू क्या है?
उत्तर – सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव लाना, जैसे महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देना।

प्रश्न 7 (कठिन). आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को खाद्यान्न (अनाज) के लिए क्यों महत्वपूर्ण माना गया था?
उत्तर – ताकि देश खाने के लिए दूसरे देशों पर निर्भर न रहे और विदेशी हस्तक्षेप से बचा जा सके।

» कृषि क्षेत्र में भू-सुधार

प्रश्न 8 (आसान). आज़ादी के समय खेती की ज़मीन पर किसका वर्चस्व था?
उत्तर – ज़मींदारों और जागीरदारों का।

प्रश्न 9 (आसान). भू-सुधार का एक मुख्य लक्ष्य क्या था?
उत्तर – कृषि में समानता लाना।

प्रश्न 10 (मध्यम). बिचौलियों के उन्मूलन से किसानों को क्या फायदा हुआ?
उत्तर – वे ज़मींदारों के शोषण से मुक्त हुए और उन्हें उत्पादन में वृद्धि के लिए प्रोत्साहन मिला।

प्रश्न 11 (कठिन). भू-सुधारों में भूमि सीमा निर्धारण कानून क्यों ज़रूरी था? इसके क्या उद्देश्य थे?
उत्तर – यह कानून इसलिए ज़रूरी था ताकि किसी एक व्यक्ति के पास बहुत ज़्यादा ज़मीन न हो। इसका उद्देश्य भू-स्वामित्व के संकेंद्रण को कम करना और समानता लाना था, ताकि छोटे किसानों को भी ज़मीन मिल सके और वे आत्मनिर्भर बन सकें।

» हरित क्रांति: उद्देश्य और प्रभाव

प्रश्न 12 (आसान). हरित क्रांति का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।

प्रश्न 13 (आसान). HYV का पूरा नाम क्या है?
उत्तर – उच्च पैदावार वाली किस्में (High Yielding Varieties)।

प्रश्न 14 (मध्यम). हरित क्रांति के लिए कौन से मुख्य इनपुट (सामग्री) ज़रूरी थे?
उत्तर – HYV बीज, पर्याप्त उर्वरक, कीटनाशक और निश्चित जल आपूर्ति (सिंचाई)।

प्रश्न 15 (कठिन). हरित क्रांति के किन्हीं दो सकारात्मक और दो नकारात्मक प्रभावों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर – सकारात्मक: खाद्यान्न उत्पादन में भारी वृद्धि, आत्मनिर्भरता, खाद्यान्नों की कीमतों में कमी। नकारात्मक: छोटे और बड़े किसानों के बीच असमानता बढ़ने की संभावना, कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से पर्यावरणीय चिंताएँ।

» कृषि सहायिकी पर बहस

प्रश्न 16 (आसान). कृषि सहायिकी क्या है?
उत्तर – सरकार द्वारा किसानों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता को कृषि सहायिकी कहते हैं।

प्रश्न 17 (आसान). हरित क्रांति के दौरान किसानों को किस चीज़ के लिए सहायिकी की ज़रूरत पड़ी थी?
उत्तर – हरित क्रांति के दौरान किसानों को नए बीज, खाद और सिंचाई के आधुनिक तरीके अपनाने के लिए सहायिकी की ज़रूरत पड़ी थी।

प्रश्न 18 (मध्यम). कुछ अर्थशास्त्री कृषि सहायिकी क्यों बंद करने की सलाह देते हैं? कोई एक कारण बताएं।
उत्तर – कुछ अर्थशास्त्री कृषि सहायिकी बंद करने की सलाह देते हैं क्योंकि उनका मानना है कि इसका लाभ लक्षित गरीब किसानों तक नहीं पहुँचता, बल्कि बड़े किसानों और उद्योगों को मिलता है और यह सरकारी खजाने पर अनावश्यक बोझ डालती है।

प्रश्न 19 (कठिन). यदि सरकार बिजली और पानी पर से सहायिकी हटा दे तो इसका किसानों और पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ सकता है? अपने विचार दें।
उत्तर – यदि सरकार बिजली और पानी पर से सहायिकी हटा दे, तो किसान इन संसाधनों का अधिक सावधानी से उपयोग करेंगे क्योंकि उन्हें इनकी पूरी कीमत चुकानी होगी। इससे पानी और बिजली की बर्बादी रुकेगी और पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। हालांकि, छोटे किसानों पर इसका बुरा असर पड़ सकता है क्योंकि उनकी लागत बढ़ जाएगी, जिससे वे कम फसल उगा सकते हैं या खेती छोड़ सकते हैं।

» भारत में औद्योगिक विकास की भूमिका

प्रश्न 20 (आसान). भारत में औद्योगिक क्षेत्रक का GDP में योगदान 1950-51 में कितना प्रतिशत था?
उत्तर – 13 प्रतिशत

प्रश्न 21 (आसान). सार्वजनिक क्षेत्रक की आवश्यकता किन उद्योगों में ज़्यादा थी?
उत्तर – आधारभूत उद्योग (जैसे स्टील, बिजली, रेलवे)

प्रश्न 22 (मध्यम). शुरुआती योजनाओं में सार्वजनिक क्षेत्रक को प्रमुख भूमिका क्यों दी गई?
उत्तर – निजी क्षेत्रक के पास बड़े उद्योगों के लिए पर्याप्त पूंजी और जोखिम लेने की क्षमता नहीं थी, इसलिए सरकार ने खुद आधारभूत उद्योगों का विकास किया।

प्रश्न 23 (कठिन). 'परमिट-लाइसेंस राज' ने औद्योगिक विकास को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – परमिट-लाइसेंस राज के कारण उद्योगपतियों को नए उद्योग शुरू करने में मुश्किल होती थी। वे प्रतिस्पर्धा से बचते थे और गुणवत्ता सुधारने की प्रेरणा भी कम होती थी, जिससे दक्षता घट गई।

» औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1956 और लाइसेंसिंग

प्रश्न 24 (आसान). औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1956 किस पंचवर्षीय योजना का आधार बना?
उत्तर – द्वितीय पंचवर्षीय योजना

प्रश्न 25 (आसान). इस नीति के अनुसार उद्योगों को कितने वर्गों में बांटा गया था?
उत्तर – तीन वर्गों में

प्रश्न 26 (मध्यम). निजी क्षेत्र के उद्योगों पर लाइसेंसिंग प्रणाली क्यों लागू की गई थी?
उत्तर – ताकि उत्पादन की मात्रा को नियंत्रित किया जा सके और क्षेत्रीय समानता को बढ़ावा मिले।

प्रश्न 27 (कठिन). यदि कोई उद्योग पिछड़े क्षेत्र में लगाया जाता था, तो उसे क्या फायदे मिलते थे?
उत्तर – लाइसेंस आसानी से मिलता था, करों में लाभ मिलता था और कम प्रशुल्क पर बिजली मिलती थी।

» लघु उद्योगों का संवर्धन

प्रश्न 28 (आसान). लघु उद्योग का मुख्य फायदा क्या है?
उत्तर – लघु उद्योग अधिक रोज़गार पैदा करते हैं।

प्रश्न 29 (आसान). लघु उद्योग की परिभाषा किस आधार पर दी जाती है?
उत्तर – किसी इकाई में किए गए अधिकतम निवेश के आधार पर।

प्रश्न 30 (मध्यम). सरकार लघु उद्योगों को बड़े उद्योगों से बचाने के लिए क्या उपाय करती थी?
उत्तर – सरकार कुछ उत्पादों को लघु उद्योगों के लिए आरक्षित कर देती थी, और उन्हें कम ब्याज दर पर बैंक ऋण व कम उत्पाद शुल्क जैसी रियायतें देती थी।

प्रश्न 31 (कठिन). शुरुआती योजना काल में लघु उद्योगों के संवर्धन को इतना महत्व क्यों दिया गया था?
उत्तर – शुरुआती योजना काल में लघु उद्योगों को इसलिए महत्व दिया गया था क्योंकि भारत में बड़ी संख्या में बेरोज़गार लोग थे, और लघु उद्योग श्रम-प्रधान होने के कारण ज़्यादा रोज़गार पैदा कर सकते थे, साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में विकास ला सकते थे।

» व्यापार नीति: आयात प्रतिस्थापन

प्रश्न 32 (आसान). आयात प्रतिस्थापन का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना और आयात पर निर्भरता कम करना।

प्रश्न 33 (आसान). आयात संरक्षण के दो प्रमुख उपाय कौन-से हैं?
उत्तर – प्रशुल्क और कोटा।

प्रश्न 34 (मध्यम). अगर सरकार किसी विदेशी वस्तु पर प्रशुल्क बढ़ाती है, तो इसका घरेलू उद्योगों पर क्या असर पड़ेगा?
उत्तर – घरेलू उद्योग विदेशी प्रतिस्पर्धा से बच जाएंगे क्योंकि विदेशी वस्तुएं महंगी हो जाएंगी और लोग घरेलू वस्तुएं खरीदेंगे।

प्रश्न 35 (कठिन). आयात प्रतिस्थापन की नीति से उपभोक्ताओं को क्या नुकसान हो सकता है?
उत्तर – उपभोक्ताओं को कम गुणवत्ता वाली या महंगी वस्तुएं खरीदनी पड़ सकती हैं, क्योंकि घरेलू उद्योगों को प्रतिस्पर्धा का डर नहीं होता और वे अपनी गुणवत्ता सुधारने के लिए प्रेरित नहीं होते।

» औद्योगिक और व्यापार नीतियों का मूल्यांकन

प्रश्न 36 (आसान). सार्वजनिक क्षेत्रक की किस आलोचना ने संसाधनों की बर्बादी की बात कही?
उत्तर – अकुशलता और घाटा।

प्रश्न 37 (आसान). लाइसेंस राज का दुरुपयोग कैसे किया गया?
उत्तर – नए प्रतिस्पर्धियों को रोकने के लिए लाइसेंस लेना।

प्रश्न 38 (मध्यम). विदेशी प्रतिस्पर्धा से संरक्षण की नीति से उपभोक्ताओं को क्या नुकसान हुआ?
उत्तर – उन्हें घटिया गुणवत्ता वाली वस्तुएं ऊंची कीमतों पर खरीदनी पड़ीं, क्योंकि घरेलू उत्पादकों को गुणवत्ता सुधारने की प्रेरणा नहीं थी।

प्रश्न 39 (कठिन). 1950-1990 की नीतियों के मूल्यांकन के आधार पर, 1991 में आर्थिक सुधारों की आवश्यकता क्यों महसूस की गई?
उत्तर – सार्वजनिक क्षेत्रक की अकुशलता, लाइसेंस राज के दुरुपयोग से बाधित हुई प्रतिस्पर्धा और विदेशी संरक्षण के कारण गुणवत्ता में कमी जैसी समस्याओं ने अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया था, जिससे नए आर्थिक सुधारों की सख्त ज़रूरत महसूस हुई।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए एक देश को तय करना है कि वह शिक्षा कैसे प्रदान करे: क्या केवल निजी स्कूल होंगे जहाँ फीस देकर कोई भी पढ़ सकता है, या केवल सरकारी स्कूल होंगे जहाँ सभी को मुफ्त शिक्षा मिलेगी, या दोनों होंगे?

› पहला तरीक़ा (पूँजीवादी): अगर सिर्फ़ निजी स्कूल होंगे, तो जिनकी जेब में पैसे होंगे, वही अच्छी शिक्षा ले पाएंगे। सरकार का इसमें कोई दख़ल नहीं होगा।

› दूसरा तरीक़ा (समाजवादी): अगर सिर्फ़ सरकारी स्कूल हों, जहाँ शिक्षा मुफ़्त मिले और सरकार ही सब तय करे, तो सबको बराबर मौका मिलेगा, पर शायद क्वालिटी पर ध्यान कम हो जाए और चुनाव के लिए कोई प्रतिस्पर्धा न रहे।

› तीसरा तरीक़ा (मिश्रित): अब सोचो, अगर दोनों हों - सरकारी स्कूल जहाँ सबको मुफ़्त शिक्षा मिले और निजी स्कूल जहाँ बेहतर सुविधाएँ हों और लोग पैसे देकर पढ़ सकें। सरकार कोशिश करे कि सरकारी स्कूलों का स्तर भी अच्छा हो, और निजी स्कूलों पर भी कुछ नियम रखे।

› तो भारत ने तीसरा तरीक़ा (मिश्रित) चुना, क्योंकि इससे सभी को शिक्षा का अवसर भी मिलता है और निजी क्षेत्र की प्रतिस्पर्धा से गुणवत्ता भी बनी रहती है।

उत्तर – भारत ने शिक्षा के लिए मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल अपनाया है, जहाँ सरकारी और निजी दोनों तरह के संस्थान काम करते हैं।

उदाहरण 2. भारतीय पंचवर्षीय योजनाओं के चार मुख्य लक्ष्य कौन से थे?

› पहला लक्ष्य था 'संवृद्धि'। इसका मतलब था देश में ज़्यादा से ज़्यादा चीज़ें बनाना, ज़्यादा सेवाएं देना।

› दूसरा लक्ष्य था 'आधुनिकीकरण'। यानी खेती में, फैक्ट्रियों में नई-नई तकनीकें लाना, ताकि काम तेज़ी से और बेहतर हो।

› तीसरा लक्ष्य था 'आत्मनिर्भरता'। इसका मतलब था कि हम अपनी ज़रूरतों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर न रहें, बल्कि खुद ही सब कुछ बना सकें, खासकर खाने-पीने की चीज़ें।

› और चौथा, सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य था 'समानता'। यानी विकास का फायदा सबको मिले, सिर्फ अमीर लोगों को ही नहीं, बल्कि गरीब और पिछड़े लोगों को भी उसका लाभ मिले।

उत्तर – पंचवर्षीय योजनाओं के चार मुख्य लक्ष्य थे: संवृद्धि, आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भरता और समानता।

उदाहरण 3. आज़ादी के बाद सरकार ने भू-सुधारों के तहत बिचौलियों के उन्मूलन का क्या मुख्य लक्ष्य रखा था?

› पहला कदम था बिचौलियों, जैसे जमींदारों, को हटाना।

› इससे किसानों का सीधा संबंध सरकार से हो गया।

› मुख्य लक्ष्य यह था कि जब किसान खुद ज़मीन का मालिक होगा, तो उसे अपनी ज़मीन में निवेश करने और उत्पादकता बढ़ाने की प्रेरणा मिलेगी।

› यानी, 'किसान को भूमि' का अधिकार देकर उसे अपनी मेहनत का पूरा फल देने का अवसर प्रदान करना, जिससे देश का अनाज उत्पादन भी बढ़े।

उत्तर – बिचौलियों के उन्मूलन का मुख्य लक्ष्य किसानों को भूमि का सीधा स्वामित्व देकर उन्हें अपनी ज़मीन में निवेश

करने और कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रेरित करना था।

उदाहरण 4. अगर एक किसान पुराने तरीके से खेती करके 10 क्विंटल गेहूँ पैदा कर रहा था, और हरित क्रांति के बाद HYV बीज, खाद और सिंचाई का सही इस्तेमाल करके उसने 30 क्विंटल गेहूँ पैदा किया, तो उत्पादन में कितने प्रतिशत की वृद्धि हुई?

› पहले का उत्पादन = 10 क्विंटल

› बाद का उत्पादन = 30 क्विंटल

› उत्पादन में वृद्धि = बाद का उत्पादन - पहले का उत्पादन = 30 - 10 = 20 क्विंटल

› प्रतिशत वृद्धि = (वृद्धि / पहले का उत्पादन) * 100

› प्रतिशत वृद्धि = (20 / 10) * 100 = 2 * 100 = 200%

उत्तर – उत्पादन में 200% की वृद्धि हुई।

उदाहरण 5. कृषि सहायिकी के पक्ष में दो तर्क और विपक्ष में दो तर्क दीजिए।

› पक्ष में तर्क (Arguments in favor):

› 1. छोटे और गरीब किसानों को नई तकनीकों (जैसे उन्नत बीज, खाद) को अपनाने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, क्योंकि वे नई चीजें खरीदने का जोखिम नहीं उठा पाते।

› 2. इससे ग्रामीण इलाकों में किसानों की आय में समानता आती है, क्योंकि अगर सब्सिडी हटा दी जाए तो सिर्फ बड़े किसान ही महंगी चीज़ें खरीद पाएंगे और गरीब किसान पीछे रह जाएँगे।

› विपक्ष में तर्क (Arguments against):

› 1. उर्वरक (खाद) और बिजली पर सब्सिडी का फायदा अक्सर छोटे किसानों की बजाय बड़े किसानों और उर्वरक बनाने वाली कंपनियों को ज्यादा मिलता है।

› 2. सब्सिडी के कारण पानी और बिजली का फिजूलखर्ची होती है, क्योंकि किसानों को ये चीजें मुफ्त या बहुत सस्ती मिलती हैं, जिससे इनकी कमी पर ध्यान नहीं जाता और पर्यावरण को भी नुकसान होता है।

उत्तर – कृषि सहायिकी के पक्ष और विपक्ष में तर्क ऊपर दिए गए हैं।

उदाहरण 6. भारत के शुरुआती औद्योगिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

› पहला चरण: आज़ादी के बाद, भारत के पास बड़े उद्योग लगाने के लिए निजी पूंजी और अनुभव की कमी थी। इसलिए सरकार ने खुद आगे आकर आधारभूत उद्योग (जैसे बिजली, रेलवे, स्टील प्लांट) शुरू किए।

› दूसरा चरण: इन उद्योगों को शुरू करने का मकसद सिर्फ मुनाफा कमाना नहीं था, बल्कि देश के विकास के लिए ज़रूरी आधार तैयार करना था, ताकि बाद में निजी क्षेत्रक भी इन सुविधाओं का इस्तेमाल करके आगे बढ़ सके।

› तीसरा चरण: इससे औद्योगिक क्षेत्रक में विविधता आई। छोटे उद्योगों को भी बढ़ावा मिला ताकि जिनके पास ज़्यादा पूंजी नहीं थी, वे भी व्यवसाय में आ सकें।

› चौथा चरण: हालांकि, बाद में कुछ सरकारी उद्योगों में inefficiencies (अक्षमताएं) और घाटे की समस्याएँ भी देखने को मिलीं, जिससे उनकी आलोचना भी हुई।

› निष्कर्ष: शुरुआती दौर में सार्वजनिक क्षेत्रक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि इसने एक मज़बूत औद्योगिक आधार प्रदान किया, जो निजी क्षेत्रक के लिए अकेले संभव नहीं था।

उत्तर – भारत के शुरुआती औद्योगिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक ने आधारभूत संरचना तैयार करने और उद्योगों को विविधता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, हालाँकि बाद में इसकी कार्यप्रणाली पर कुछ सवाल भी उठे।

उदाहरण 7. मान लीजिए, 1960 में कोई उद्यमी एक नई साइकिल बनाने वाली फैक्ट्री खोलना चाहता है। औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1956 के तहत उसे क्या करना होगा और किस वर्ग में वह आएगा?

› पहला कदम: उद्यमी को सरकार से 'लाइसेंस' के लिए आवेदन करना होगा, क्योंकि साइकिल निर्माण एक निजी क्षेत्र का उद्योग था।

› दूसरा कदम: सरकार यह देखेगी कि देश में साइकिलों की कितनी आवश्यकता है और क्या इस क्षेत्र में और उत्पादन की ज़रूरत है।

› तीसरा कदम: यदि उद्यमी किसी पिछड़े क्षेत्र में फैक्ट्री लगाने का प्रस्ताव देता है, तो उसे लाइसेंस मिलने में आसानी

होगी और टैक्स में भी कुछ छूट मिल सकती है।

› चौथा कदम: यह उद्योग 'तीसरे वर्ग' में आएगा, जहाँ निजी क्षेत्र काम कर सकता है लेकिन सरकार के नियंत्रण (लाइसेंस) में।

उत्तर – उद्यमी को लाइसेंस लेना होगा और वह तीसरे वर्ग के उद्योगों में शामिल होगा।

उदाहरण 8. सरकार ने 1955 में कर्वे समिति क्यों बनाई और इसका लघु उद्योगों से क्या संबंध था?

› कर्वे समिति (या ग्राम तथा लघु उद्योग समिति) का गठन 1955 में हुआ था।

› इसका मुख्य उद्देश्य यह विचार करना था कि गांवों के विकास को बढ़ावा देने के लिए लघु उद्योगों का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

› समिति ने पहचाना कि लघु उद्योग अधिक श्रम-प्रधान होते हैं, यानी वे बड़े उद्योगों की तुलना में ज़्यादा लोगों को रोज़गार देते हैं।

› इसलिए, समिति की सिफारिशों ने लघु उद्योगों को ग्रामीण विकास और रोज़गार सृजन का एक महत्वपूर्ण साधन माना, और उनके संवर्धन (बढ़ावा देने) की बात कही।

उत्तर – 1955 में कर्वे समिति का गठन ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिए लघु उद्योगों के उपयोग की संभावनाओं पर विचार करने के लिए किया गया था, क्योंकि ये उद्योग अधिक रोज़गार पैदा करते थे।

उदाहरण 9. मान लीजिए भारत सरकार को पता चला कि विदेश से आने वाले खिलौने बहुत सस्ते हैं और भारत के खिलौना बनाने वाले उद्योग उनसे मुकाबला नहीं कर पा रहे। सरकार 'आयात प्रतिस्थापन' की नीति के तहत क्या कदम उठा सकती है?

› सबसे पहले, सरकार देखेगी कि भारतीय खिलौना उद्योग अभी कमजोर क्यों है और उसे किस तरह की सुरक्षा चाहिए।

› दूसरा, सरकार 'प्रशुल्क' लगा सकती है। मतलब, विदेश से आने वाले खिलौनों पर अतिरिक्त टैक्स लगा देगी। इससे विदेशी खिलौने महंगे हो जाएंगे और भारतीय लोग अपने देश के खिलौने खरीदना पसंद करेंगे।

› तीसरा, सरकार 'कोटा' तय कर सकती है। यानी, एक निश्चित मात्रा तय कर देगी कि इतने ही खिलौने विदेश से आ सकते हैं। इससे ज्यादा खिलौने नहीं आ पाएंगे, जिससे भारतीय खिलौना उद्योगों को बाज़ार में जगह मिलेगी।

› साथ ही, सरकार भारतीय खिलौना निर्माताओं को भी मदद दे सकती है, जैसे सस्ती दरों पर लोन देना या अच्छी मशीनें खरीदने में सहायता करना, ताकि वे भी गुणवत्ता सुधार सकें।

उत्तर – सरकार विदेशी खिलौनों पर प्रशुल्क (टैक्स) लगाकर उन्हें महंगा करेगी और कोटा (मात्रा की सीमा) तय करके उनके आयात को सीमित करेगी, ताकि भारतीय खिलौना उद्योग बढ़ सकें।

उदाहरण 10. भारतीय अर्थव्यवस्था पर 1950-1990 की औद्योगिक और व्यापार नीतियों के किन्हीं दो नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करें।

› पहला नकारात्मक प्रभाव था 'सार्वजनिक क्षेत्रक की अकुशलता और घाटा'। उस समय कई सरकारी कंपनियों ने भारी नुकसान उठाया, लेकिन उन्हें बंद करना मुश्किल था, जिससे देश के संसाधनों का गलत इस्तेमाल हुआ। जैसे, 'मॉडर्न ब्रेड' जैसी कंपनी को सरकार चलाती रही, जबकि निजी क्षेत्र भी ब्रेड बना सकता था।

› दूसरा नकारात्मक प्रभाव था 'लाइसेंस राज का दुरुपयोग'। उद्योग शुरू करने के लिए लाइसेंस ज़रूरी था। बड़े उद्योगपति नए उद्योग लगाने के बजाय, बस लाइसेंस इसलिए ले लेते थे ताकि कोई दूसरा नया उद्योग शुरू न कर पाए। इससे प्रतिस्पर्धा खत्म हो गई और उद्योग अपनी गुणवत्ता सुधारने पर ध्यान नहीं देते थे।

› तीसरा, 'विदेशी प्रतिस्पर्धा से संरक्षण की कमियां'। जब बाहर से आने वाली चीज़ों पर बहुत पाबंदी लग गई, तो हमारे देश के उद्योगों को ये पता था कि लोग उन्हीं का सामान खरीदेंगे। इससे उन्हें अपनी चीज़ों की गुणवत्ता सुधारने की कोई ज़रूरत नहीं लगी, और उपभोक्ताओं को अक्सर घटिया चीज़ें ऊंची कीमतों पर खरीदनी पड़ती थीं।

उत्तर – 1950-1990 की औद्योगिक और व्यापार नीतियों के मुख्य नकारात्मक प्रभावों में सार्वजनिक क्षेत्रक की अकुशलता और घाटा, लाइसेंस राज का दुरुपयोग, और विदेशी प्रतिस्पर्धा के अभाव में घरेलू उद्योगों द्वारा गुणवत्ता में सुधार न करना शामिल हैं।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर 'पूँजीवादी, समाजवादी और मिश्रित अर्थव्यवस्था' की परिभाषाएँ और उनके बीच अंतर पूछा जाता है। भारत ने मिश्रित मॉडल क्यों चुना, इस पर भी प्रश्न आते हैं।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है, खासकर चारों लक्ष्यों की परिभाषाएँ और उनके पीछे का कारण पूछा जाता है। इन्हें अच्छे से समझ लेना, बेटा।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! भू-सुधारों के प्रकार (बिचौलियों का उन्मूलन, भूमि सीमा निर्धारण), उनके लक्ष्य और प्रभावों पर सीधा प्रश्न आ सकता है। केरल और पश्चिम बंगाल के उदाहरणों पर भी ध्यान देना, क्योंकि उन्होंने इन सुधारों को अच्छे से लागू किया था।

• हरित क्रांति के उद्देश्य, इसके विभिन्न चरण, और इसके सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों पर अक्सर बोर्ड परीक्षा में सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। इन्हें अच्छे से समझना और बिंदुवार लिखना बहुत महत्वपूर्ण है।

• यह प्रश्न 'सार्वजनिक बनाम निजी क्षेत्रक की भूमिका' या 'लाइसेंस राज के प्रभाव' पर अक्सर पूछा जाता है। सारे बिंदु याद रखना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1956 की विशेषताओं और लाइसेंसिंग के उद्देश्यों को ध्यान से समझें और बिंदुओं में लिखने का अभ्यास करें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 'लघु उद्योगों के महत्व' या 'सरकार द्वारा अपनाई गई संवर्धन नीतियों' पर सीधा प्रश्न बनकर आता है। परिभाषा और नीतियों के बिंदु याद रखना बहुत ज़रूरी है।

• यह नीति बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर भारतीय अर्थव्यवस्था के शुरुआती दौर को समझने के लिए। प्रशुल्क और कोटा की परिभाषा और उनके प्रभावों को उदाहरण के साथ याद रखना, क्योंकि अक्सर इन्हीं पर सवाल आते हैं।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं कि 1950-1990 की औद्योगिक नीतियों की आलोचनात्मक समीक्षा करें या उनके नकारात्मक प्रभावों का वर्णन करें।

एक नज़र में रिवीज़न

› तीन आर्थिक प्रणालियाँ: पूँजीवादी, समाजवादी, मिश्रित। भारत का मॉडल: मिश्रित अर्थव्यवस्था।

› पंचवर्षीय योजनाएँ: संवृद्धि, आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भरता, समानता लक्ष्य।

› भू-सुधार: बिचौलियों का उन्मूलन, भूमि सीमा निर्धारण; लक्ष्य समानता, उत्पादकता वृद्धि।

› हरित क्रांति: HYV बीज, उर्वरक, सिंचाई से खाद्यान्न आत्मनिर्भरता; सकारात्मक-नकारात्मक प्रभाव।

› औद्योगिक विकास ने GDP में वृद्धि की; सार्वजनिक क्षेत्रक ने आधार तैयार किया, पर चुनौतियाँ भी थीं।

› 1956 औद्योगिक नीति: उद्योगों का 3 वर्ग, लाइसेंसिंग प्रणाली, क्षेत्रीय समानता पर जोर।

› लघु उद्योग = अधिक रोज़गार, ग्रामीण विकास; आरक्षण, रियायतें।

› आयात प्रतिस्थापन: घरेलू उत्पादन से आयात बदलना, प्रशुल्क व कोटा से संरक्षण।

› सार्वजनिक क्षेत्रक की अकुशलता, लाइसेंस राज का दुरुपयोग, प्रतिस्पर्धा की कमी।